प्रातः क्लास 22/10/68 ओमशान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है?

ओमशान्ति। रूहानी मीठे–2 बच्चों प्रति रूहानी बाप बैठ समझाते हैं तुम बच्चे सभी क्या कर रहे हो। तुम्हारी है अव्यभिचारी याद। एक होती है व्यभिचारी याद, दूसरी होती है अव्यभिचारी याद। तुम सभी की है अव्यभिचारी याद। किसकी याद है? एक बाप की। बाप को याद करते2 ही पाप कट जावेंगे। और तुम वहाँ पहुँच जावेंगे। पावन बनकर फिर नई दुनिया में जाना है। आत्माओं को जाना है। आत्मा ही इन आरगन्स द्वारा सभी कर्म करती है। तो बाप कहते हैं अपन को आत्मा समझो और बाप को याद करो। मनुष्य तो अनेकानेक को याद करते हैं भक्तिमार्ग में। तुमको याद करना है एक को। भक्ति भी पहले तुमने ऊँच ते ऊँच एक शिवबाबा की। इनको कहा जाता है अव्यभिचारी याद। वह है सर्व की सद्गति देने वाला रचयिता बाप है। उनसे बच्चों को बेहद का वरसा मिलता है। भाई2 से वरसा नहीं मिलता है। थोड़ा बहुत कन्याओं को मिलता है। वह तो फिर जाकर हाफ पार्टनर बनती हैं। यहाँ तो तुम सभी आत्माएँ हो। सभी आत्माओं का बाप एक है। सभी को बाप से वरसा लेना हक है। तुम हो भाई2 भल शरीर स्त्री पुरुष का है। आत्माएँ सभी भाई2 हैं। वह तो सिर्फ कहने मात्र कह देते हैं हिन्दू–मुस्लिम भाई2 अर्थ नहीं समझते। तुम अभी अर्थ समझते हो। भाई2 माना सभी आत्माएँ बाप के बच्चे हैं। फिर प्रजापिता ब्रह्मा के बच्चे भाई–बहन हैं। अभी तुम जानते हो इस दुनिया से सभी को वापस जाना है। जो भी मनुष्य मात्र हैं सभी का पार्ट अभी पूरा होता है। फिर बाप आकर पुरानी दुनिया से नई दुनिया में ले जाते हैं। पार ले जाते हैं। गाते भी हैं मांझी मेरी नइया पार लगाओ। अर्थात् सुखधाम में ले चलो। इस पुरानी दुनिया को बदल कर फिर नई दुनिया जरूर बनती है। सारी दुनिया का नक्शा तुम्हारी बुद्धि में है। मूलवतन से लेकर। अपने स्वीटधाम, शान्तिधाम के निवासी हम सभी आत्माएँ हैं। यह तो बुद्धि में याद है ना। जब हम सतयुगी नई दुनिया में थे तो बाकी और सभी आत्माएँ शान्तिधाम में रहते थे। आत्मा तो कब विनाश होती नहीं। आत्मा में अविनाशी पार्ट भरा हुआ है। वह भी कब विनाश नहीं हो सकता। समझो यह इंजीनियर है फिर 5000 वर्ष बाद हूबहू ऐसा ही इंजीनियर बनेंगे। यही नाम–रूप, देश–काल रहेगा। यह सभी बातें बाप ही आकर समझाते हैं। यह अनादि अविनाशी ड्रामा है। इस ड्रामा की आयु 5000 वर्ष है। सेकण्ड भी कम जास्ती नहीं हो सकता। यह अनादि बना बनाया ड्रामा है। सभी को पार्ट मिला हुआ है। देहीअभिमानी साक्षी हो देखना है। बाप को तो देह है नहीं। वह नालेजफुल, बीजरूप है। बाकी आत्माएँ जो ऊपर में, निराकारी दुनिया में रहती हैं वह फिर आती हैं नम्बरवार पार्ट बजाने। पहले नम्बर शुरू होता है देवताओं का। पहले नम्बर के डिनायस्टी के ही चित्र हैं। फिर चन्द्रवंशी डिनायस्टी का भी चित्र है। ..... सबसे ऊँच है सूर्यवंशी ल0ना0 का राज्य। इन्हों का राज्य कब, कैसे स्थापन हुआ कोई भी मनुष्य मात्र नहीं जानते। सतयुग की आयु ही लाखों वर्ष लिख दी है। कोई की भी जीवन कहानी को नहीं जानते हैं। इन ल0ना0 की जीवन कहानी को तो जानना चाहिए ना। बिगर जानने माथा टेकना अथवा इनकी महिमा करना यह तो रांग हुआ ना। बाप बैठ मुख्य2 जो है उनकी जीवन कहानी सुनाते हैं। अभी तुम जानते हो कैसे इन्हों की राजधानी चलती है। सतयुग में श्रीकृष्ण था ना। अभी फिर वह कृष्णपुरी स्थापन हो रही है। कृष्ण तो है स्वर्ग का प्रिन्स। ल0ना0 की राजधानी कैसे स्थापन हुई यह अभी तुम समझते हो। तुम नम्बरवार माला भी बनाते थे ना। फलाने–2 माला के यह दाने बनेंगे; परन्तु चलते–2 फिर हार भी खा लेते हैं। माया हराये देती है। जब तक सेना में हैं कहेंगे यह कमान्डर है, यह फलाना है। फिर मर पड़ते हैं। यहाँ मरना अर्थात् अवस्था कम होने से माया हरा देती है, खत्म हो जाते हैं। आश्चर्यवत कथन्ति सुनन्ति भागन्ति हो जाते हैं अहो मम माया, विनश्यन्ति हो जाते हैं। फारकती दे देते हैं। मरजीवा बनते हैं, बाप का बनते हैं फिर रामराज्य से रावण राज्य में चले जाते हैं। इस पर ही फिर युद्ध दिखलाई है कौरव और पाण्डवों की। फिर असुरों और देवताओं का भी युद्ध दिखाते हैं। अरे एक तो युद्ध दिखाओ ना। दो क्यों, बाप बैठ समझाते हैं यहाँ की ही बात है। असुरों और देवताओं की भी

युद्ध बैठ दिखलाते हैं। अभी कौनसी सत्य कहेंगे? लड़ाई तो हिंसा हो जाती है। यह तो है ही अहिंसा देवी देवता परमोधर्म। तुम अभी डबल अहिंसक बनते हो। तुम्हारी है ही योगबल की बात। हथियारों से तुम कोई को कुछ नहीं करते हो। वह ताकत तो क्रिश्चनस में भी बहुत है। रशिया और अमेरिका दो भाई हैं। इन दोनों के ही कम्पटीशन है बम्स आदि बनाने की। दोनों एक/दो से ताकत वाले हैं। इतनी ताकत है अगर दोनों आपस में मिल जायें तो सारे वर्ल्ड पर राज्य कर सकते हैं; परन्तु लॉ नहीं है जो बाहुबल से कोई विश्व पर राज्य पा सके। कहानी भी दिखाते हैं दो बिल्ले आपस में लड़े। मक्खन बीच में तीसरा खा गया। यह भी बातें अभी बाप बैठ समझाते हैं। यह थोड़े ही कुछ जानता था। यह चित्र आदि भी बाप ने दिव्य दृष्टि आदि से बनाई है। और समझा रहे हैं। वह आपस में लड़ते हैं, विश्व की बादशाही बीच में तुमको मिलती है। वह दोनों हैं बहुत पावर फुल। जहाँ तहाँ ऐसे कर देते हैं। मदद देते रहते हैं; क्योंकि उन्हों का भी व्यापार है जबरदस्त। सो जब दो आपस में लड़ें तब तो बारुद आदि काम आये। जहाँ तहाँ एक/दो को लड़ा देते हैं। यहाँ हिन्दुस्तान पाकिस्तान कोई अलग–2 था क्या। दोनों इकट्ठे रहते थे। यह भी सभी ड्रामा में नूँध है। हैं बहुत पावरफुल। आपस में मिल जायें तो सभी कुछ कर सकते हैं; परन्तु ड्रामा में ऐसी नूँध है नहीं। अभी तुम पुरुषार्थ कर रहे हो योगबल से विश्व का मालिक बनने। वह आपस में लड़ते हैं, मक्खन बीच में तुम खाते हो। मक्खन अर्थात् विश्व की बादशाही तुमको मिलती है। और ही बहुत सहज रीति मिलते हैं। बाप कहते हैं मीठे बच्चों एक तो पवित्र जरूर बनना है। पवित्र बन पवित्र दुनिया में चलना है। उनको कहा ही जाता है वायसलेस वर्ल्ड। सम्पूर्ण निर्विकारी दु0। हरेक चीज़ सतोप्रधान, सतो, रजो, तमो में आती है। यह बाप बैठ समझाते हैं। तुम्हारे में यह बुद्धि थी नहीं; क्योंकि शास्त्रों में लाखों वर्ष कह दिया है। भक्ति है ही अज्ञान अंधियारा। यह भी तुमको पहले पता थोड़े ही था अभी समझते हो। वह तो कह देते कलियुग अजन 40 हजार वर्ष चलेगा। अच्छा 40 हजार वर्ष पूरा हो फिर क्या होगा? किसको भी पता नहीं है। इसलिए कहा जाता है अज्ञान नींद में सोये हुए हैं। भक्ति है अज्ञान। ज्ञान देने वाला तो एक ही बेहद का बाप है। ज्ञान का सागर है। तुम हो ज्ञान नदियाँ। बाप आकर के तुम बच्चों को अर्थात् आत्माओं को पढ़ाते हैं। वह बाप भी है, टीचर भी है, सद्गुरु भी है। और कोई भी ऐसे नहीं कहेंगे यह हमारा बाप, टीचर, गुरु है। साधु–सन्त आदि को भी कब कोई ऐसे नहीं कहेंगे। यह है बेहद की बात। बेहद का बाप, टीचर, सद्गुरु है। जो बैठ समझाते हैं मैं तुम्हारा सुप्रीम बाप हूँ। तुम सभी हमारे बच्चे हो। तुम भी कहते हो बाबा आप वही हो। बाप भी कहते हैं तुम कल्प2 मिलते हो। तो वह है परमपिता। सुप्रीम। वह आकर बच्चों को सभी बातें समझाते हैं। कलियुग की आयु 40 हजार वर्ष कहना बिल्कुल ही गपोड़ा है। 5000 वर्ष में सभी आ जाते हैं। बाप समझाते हैं तुम मानते हो समझते हो, ऐसे नहीं कि तुम ऐसे नहीं मानते हो। अगर न मानते तो यहाँ नहीं आते। इस धर्म के न हैं तो मानते नहीं हैं। बाप ने समझाया है सारा मदार भक्ति पर है। जिन्होंने बहुत भक्ति की है तो भक्ति का फल भी पहले उन्हों को मिलना है। उन्हों को ही बाप बेहद का वरसा देते हैं। तुम जानते हो हम सो देवता विश्व के मालिक बनते हैं। बाकी थोड़ा रोज़ है। इस पुरानी दुनिया का विनाश तो दिखाया हुआ है। और कोई शास्त्रों में ऐसी बातें हैं नहीं। एक गीता ही है। भारत का धर्म शास्त्र भी गीता ही है। हरेक को अपना धर्म–शास्त्र पढ़ना चाहिए। और वह धर्म जिस द्वारा स्थापन हुआ उनको भी जानना चाहिए। जैसे क्रिश्चयन क्राइस्ट को मानते हैं। उनको ही जानते हैं। पूजते हैं। तुम आदि सनातन देवी–देवता धर्म के हो तो देवताओं को ही पूजते हो; परन्तु आजकल अपना धर्म हिन्दू कह देते हैं। बाबा ने बताया था पहले–2 शुरू में सावरकर आया था उनसे पूछा गया तुम किस धर्म के हो तो बोला असल तो देवी–देवता धर्म का हूँ; परन्तु अभी हिन्दू धर्म कह देते हैं; क्योंकि हम असुर, विकारी, पापी हैं तो अपन को हम देवता कैसे कहें। उनको कहा गया तो यहाँ आकर पावन बनो। तो बोले फुर्सत नहीं है हम राजयोग कैसे सीखेंगे। तुम बच्चे अभी राजयोग सीख रहे हो। तुम राजऋषि हो। वह है हठयोग ऋषि। रात–दिन का फर्क है। उन्हों का सन्यास

है कच्चा। हद का सिर्फ घर–बार छोड़ने का। तुम्हारा सन्यास वा वैराग्य है सारी पुरानी दुनिया को छोड़ने का। पहले2 अपने घर स्वीटहोम में जाकर फिर नई दुनिया सतयुग में आवेंगे। ब्रह्मा द्वारा आदि सनातन देवी देवता धर्म की स्थापना होती है। अभी तो यह पुरानी पतित दुनिया है। यह समझने की बात है। बाप द्वारा पढ़ते हैं यह तो जरूर रीयल है ना। इसमें निश्चय न होने की तो बात ही नहीं। सभी समझते हैं यह नालेज बाप ही पढ़ाते हैं। वह बाप टीचर भी है सच्चा सद्गुरु भी है साथ में ले जाने वाला। वह गुरु लोग तो आधा पर ही छोड़कर चले जाते हैं। एक गुरु गया फिर दूसरा करेंगे। उनके चेले को गद्दी पर बिठा देंगे। यहाँ तो है बाप और बच्चों की बात। वह फिर है गुरु और चेले के वरसे का हक। वरसा तो बाप का चाहिए ना। शिवबाबा आते ही हैं भारत में। शिवरात्रि भी है। कृष्ण की भी रात्रि मनाते हैं। शिव की जन्मपत्री तो है नहीं। मनावे कैसे। तिथी तारीख तो होती नहीं उनकी। कृष्ण जो पहला नम्बर वाला था उनकी दिखाते हैं। (बम्बई से फोन आया).....दीपावली मनाना तो दुनिया के मनुष्यों का काम है। तुम बच्चों के लिए थोड़े ही दीवाली है। हमारा नया बरस तो होगा 1–1–1 एक तारीख, एक मास, एक वर्ष। यह तो पुरानी बात हो गई। दीवाली के ग्रीटिंग्स आदि देना यह भी भूल है। इनको कहा जाता है देह–अभिमान। देही अभिमानी हो तो ऐसी2 भूल कर न सके। यह तो समझ की बात है ना। नई दुनिया सतयुग को कहा जाता है। अभी तुम नई दुनिया के लिए पढ़ रहे हो। अभी तुम हो पुरुषोत्तम संगमयुग पर। उस कुम्भ के मेले पर कितने ढेर मनुष्य जाते हैं। वह होता है पानी की नदियों का मेला। बाप ने तो समझाया है साधु सन्त आदि सभी पापात्माएँ ही हैं। कितने ढेर मेले लगते हैं। उन्हों के भी अन्दर बड़ी पंचायत होती है। कब कब तो उन्हों का आपस में ही झगड़ा हो जाता है। फिर पुलिस आ जाती है। देहअभिमानी हैं। यहाँ तो झगड़े आदि की कोई बात ही नहीं। बाप सिर्फ कहते हैं मीठे2 लाडले बच्चों मुझे याद करो। तुम्हारी आत्मा जो सतोप्रधान से तमो0 बनी है। खाद पड़ी है ना। वह योग अग्नि से ही निकलेगी। सोनार लोग जानते हैं बाप को ही पतित पावन कहते हैं। बाप सुप्रीम सोनार ठहरा। सभी की खाद निकाल सच्चा सोना बना देते हैं। सोना अग्नि में डाला जाता है। यह है योग अर्थात् याद की अग्नि। स्टुडेन्ट को टीचर की याद कहाँ भी तो होगी ना; परन्तु वह याद अग्नि नहीं है। इसको योग–अग्नि, याद की अग्नि कहते हैं क्योंकि याद से ही पाप भस्म होनी है। तमोप्रधान से सतोप्रधान याद की यात्रा से ही बनना है। सभी तो सतोप्रधान नहीं बनेंगे। कल्प पहले मिसल ही पुरुषार्थ करेंगे। परमआत्मा का भी ड्रामा में पार्ट नूँधा हुआ है। जो नूँध है वह कनलता रहता है। बदल नहीं सकता। रील फिरता ही रहता है। बाप कहते हैं आगे तुमको बहुत गुह्य2 सुनावेंगे। पहले2 तो यह निश्चय करना है वह हम सभी आत्माओं का बाप है। उनको याद करना है। मन्मनाभव का भी अर्थ यह है। बाकी कृष्ण भगवानुवाच तो है नहीं। अगर कृष्ण हो तो फिर तो उनके पास सभी चले जावेंगे। सभी पहचान ले। फिर ऐसे क्यों कहे कि मुझे कोटों में कोऊ ही जानते हैं। यह तो बाप समझाते हैं। इसलिए मनुष्यों को समझने में तकलीफ होती है। आगे भी ऐसे होता था। मैंने ही आकर देवी–देवता धर्म की स्थापना की थी फिर यह शास्त्र आदि सभी गुम हो जाते हैं। फिर अपने समय पर ही भक्ति मार्ग के शास्त्र आदि वही निकलेंगे। सतयुग में एक भी शास्त्र नहीं होता। भक्ति का नाम निशान नहीं। अभी तो भक्ति का राज्य है। सबसे बड़े हैं श्री श्री 108 जगदगुरु कहलाने वाले। आजकल तो एक हजार 108 भी कह देते हैं। वास्तव में यह माला है ही यहाँ की। माला जब फेरते हैं तो जानते हैं फुल निराकार है। फिर है मेरू ब्रह्मा सरस्वती युगल। क्योंकि प्रवृत्ति मार्ग है ना। प्रवृत्ति मार्ग वाले निवृत्ति मार्ग वाले को गुरु करें तो वह क्या देंगे। हठयोग सीखनी पड़े। वह तो अनेक प्रकार के हठयोग आदि हैं। राजयोग है ही एक प्रकार का। याद की यात्रा है ही एक। उनको राजयोग कहा जाता है। बाकी वह सभी हैं हठयोग शरीर की तन्दुरुस्ती के लिए। यह राजयोग बाप ही सिखलाते हैं। अपन को आत्मा समझ बाप को याद नहीं कर सकते हो। आत्मा है फर्स्ट। फिर पीछे हैं शरीर। तुम फिर अपन को आत्मा के बदली शरीर समझ उल्टी हो

पड़े हो। अब अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो। तो अन्त मते सो गति हो जावेगी। तुम जानते हो इस समय पतित तमोप्रधान हैं। बुलाते भी ऐसे हैं कि हे पतित–पावन आओ। ताली बजाते रहते और गाते रहते पतित पावन..... अभी पानी की गंगा कैसे पावन बनावेगी। वह पानी तो कॉमन रीति सब जगह है। बाकी हाँ सतयुग में तुम्हारी प्रकृति दासी रहती है। जरा भी दुख नहीं मिलता। वहाँ होते ही हैं सिर्फ देवी देवताएँ। फिर भी वही बनेंगे। नाम रूप आदि में जरा भी फर्क नहीं पड़ेगा। कृष्ण भी वही बनेगा। बहुतों का सा0 होता है। कृष्ण जयन्ती में बड़ा ही प्रेम से कृष्ण को झूले में झुलाते हैं। देखते हैं कृष्ण के मुख मक्खन है; परन्तु बाप समझाते हैं मक्खन कोई वह नहीं। यह विश्व की बादशाही पर मक्खन है। इस रचयिता और रचना की नॉलेज को दुनिया में और कोई नहीं जानते हैं। भगवान को ही कण2 में डाल कितनी अति ग्लानि कर दी है। यह ग्लानि है ना। बाप कहते हैं सबसे जास्ती ग्लानि मेरी की है। मेरा कितना अपकार करते हैं। मैं फिर भी आकर तुम्हारा कितना उपकार करता हूँ। सभी कहते हैं वह तो हाजरा हजूर है। बाप को तो कोई देख नहीं सकते हैं। हजारों सूर्यों का तेज आदि काहे का है। यह तो पढ़ाई की बात है। बाप नालेजफुल है ना। लाइट फुल नहीं कह सकते। ऑलमाइटी अथार्टी है। अभी तुम्हारी आत्मा तमोप्रधान बनी है सो फिर सतोप्रधान बन सारे विश्व का राज्य लेती है। सुप्रीम बाप एक ही है। सभी आत्माओं का फादर ऊपर में रहते हैं। जिसको ही सभी याद करते हैं। वह पुनर्जन्म में नहीं आता। बाप समझाते हैं मुझे प्रकृति का आधा(र) लेना पड़ता है। दुनिया भी पतित है तो शरीर भी पतित है। लास्ट सो फिर नम्बरवन होना है। यह शरीर ही सबसे जास्ती पतित बना है। इनमें ही फिर प्रवेश किया है। पराया तन, पराया देश। अभी तुम बच्चों को अव्यभिचारी ज्ञान लेना है एक से। बाकी शास्त्रों का ज्ञान कोई ज्ञान नहीं है। नहीं तो उनसे सदगति हो जाती। अभी तुम समझते हो बाप आये हैं सभी को ले जाने। सभी शान्तिधाम चले जावेंगे। तुम सभी पार्वतियाँ हो। अमरकथा सुन रही हुई हो अमरपुरी में जाने के लिए। तुम कहेंगे बाबा हम अनेकानेक बार नई दुनिया में गये हैं फिर पुरानी दुनिया में आये हैं। बाप बच्चों को रोज़2 पढ़ाते रहते हैं। तुम बच्चों को स्वदर्शनचक्रधारी बनना है। विष्णु के लिए जो दिखाया है उनमें तो ज्ञान है नहीं। स्वदर्शनचक्रधारी ब्राह्मण। कितनी गुह्य बातें हैं। और कोई समझ न सके। नॉलेज अभी तुमको ही मिलती है। विष्णु अथवा ल0ना0 को यह नालेज होती ही नहीं। अगर उनमें भी ज्ञान होता तो वह परंपरा चली आती। यह ज्ञान तो अभी तुमको मिलता है फिर प्रायःलोप हो जाता है। बाकी जाकर निशान रहती है। शिवभगवानुवाच के बदली कृष्ण भगवानुवाच लिख दिया है। यह तो रांग हो गया ना। रांग2 तुम सुनते2 तमोप्रधान बन गये हो। इस ड्रामा के राज़ को कोई भी नहीं जानते हैं। एक दिन सन्यासी आदि भी सभी तुम्हारे चरणों में आवेंगे। बाकी बाण आदि मारने की कोई बात नहीं हैं। यह ज्ञान–बाण है। शास्त्रों में तो क्या2 लिख दिया है। तीर मारा फिर गंगा निकली। अब तीर मारने से पानी कैसे निकल सकता है यह है बेसमझ। बेसमझ की बातें सुनते2 तमोप्रधान बेसमझ बन पड़े हैं। बिल्कुल ही दिवाला मार दिया है। भारत कितना गरीब बन पड़ा है। बाप कहते हैं मैं भी गरीबनिवाज़ हूँ। आता भी मैं भारत में ही हूँ। यहाँ बैठे ही सारे विश्व की सद्गति करते हैं। इसलिए सबसे बड़ा तीर्थ यह है। जहाँ भगवान सर्व की सदगति करते हैं। जीने मरने की बात नहीं। बाप प्रवेश कर समझाते हैं। बाप है बीज रूप। उनमें सारी नॉलेज है जो तुमको देते हैं। बाकी कोई बड़ी चीज भी नहीं। इतना बड़ा लिंग भृकुटि के बीच कैसे बैठेगा। तो मीठे2 बच्चे तुम जानते हो हम सभी शिवबाबा के साथ ही जावेंगे। उनको कहा जाता है शिवबाबा की बारात। सभी बच्चों को श्रृंगार ले जावेंगे। पहाड़ी पर जब जाते हैं तो दो इंजन लगाते हैं ना। तुमको भी दो बाप मिले हैं। बाप कहते हैं निरन्तर मामेकम् याद करो। मन्मनाभव। यह है महामंत्र। माया को वश करने का मंत्र। इनको कहा जाता है वशीकरण मंत्र। ल0ना0 बनना है तो इतना पुरुषार्थ करना है। बाप को घड़ी2 भूल जावेंगे तो पाप कैसे कटेंगे। अच्छा मीठे2 रूहानी सिकीलधे बच्चों प्रति रूहानी बाप व दादा का यादप्यार गुडमॉर्निंग और नमस्ते।

विश्व की बादशाही का श्रृंगार याद है?